कृषि और किसान : वर्तमान परिदृश्य

डॉ0 श्रीप्रकाश सिंह

भारत में कृषि सम्पूर्ण देशवासियों का कल्याण सुनिश्चित करने की दृष्टि से एक निर्णायक तत्व है। कृषि देश में उपलब्ध 54.6 प्रतिशत श्रमिकों को रोजगार प्रदान करती है। कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था का मेरूदण्ड है क्योंकि आधी से अधिक जनसंख्या इसमें नियोजित होने से यह जीविका निर्वाह का प्रमुख साधन है। लेकिन इसके बावजूद सकल घरेलू उत्पाद में कृषि का हिस्सा निरन्तर घटता रहा है। वर्ष 1950–51 में जहाँ सकल घरेलू उत्पाद में हिस्सेदारी 51.9 प्रतिशत थी, 1982–83 में 39.4 प्रतिशत और वहीं 2006–07 में घटकर 18.5 प्रतिशत तथा 2017–18 में और घटकर 14 प्रतिशत से भी कम हो गया है। जी0डी0पी0 में घटती हिस्सेदारी के बावजूद आज भी यह एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है क्योंकि इससे देश की 130 करोड़ आबादी को खाद्य सुरक्षा प्राप्त होती है और कृषि आधारित उद्योगों को कच्चा माल प्राप्त होता है। देश की आजादी के बाद कृषि की दशा सुधारने के लिए 1949 में अधिक अन्न उपजाओ कार्यक्रम, 1966–67 में देश में पहली हरित क्रान्ति आयी जिससे अप्रत्याशित रूप से खाद्यान्न उत्पादन बढ़ा और कृषि में सुधार तथा कृषकों की दशा में कुछ सुधार आया। परन्तु पूरी तरह कृषि कार्य में संलग्न कृषकों एवं कृषि मजदूरों की दशा अभी भी सोचनीय बनी हुई है। कृषकों की निम्न आय, उनका निम्न जीवन स्तर, कृषकों द्वारा कृषि में हुये नुकसान, किसान आत्म हत्या आदि तथ्य नियोजकों शिक्षाविदों, कृषि वैज्ञानिकों एवं राजनेताओं के लिए चिंता का विषय बने हुए हैं।